शिवनारायण गौर

फूलों की माला

वे एक छोटे शहर में रहते हैं। यह शहर एक नदी का शहर है। इस नदी और कई अन्य कारणों से यह शहर एक धार्मिक स्थल के रूप में मशहूर है। यहाँ रोज़ाना काफी लोगों का आना-जाना होता है। आमतौर पर सुबह-शाम आने वाली पैसेन्जर ट्रेन से बड़ी संख्या में लोग आते-जाते हैं।

वे सज्जन इसी शहर में ही तो रहते हैं। वही जिनके बारे में यहाँ बात करने वाले हैं। वे साठ से ऊपर के ही होंगे। सारी उमर वे राजनीति से जुड़े रहे। इस उमर में उन्हें इस बात का बड़ा अफसोस रहता है कि उनकी इतने साल की मेहनत से उन्हें कुछ नहीं मिला। कुछ ऐसा जिस पर वे गर्व कर सकते। कितना गुस्सा आता होगा उन्हें, हमें क्या पता? इस गुस्से ने उनके दिमाग पर भी असर डाला है। उनके मन में यह असफलता गहरे से बैठ गई है। अब वे जाने-अनजाने भीड़ और सम्मान की चाह में इधर-उधर घूमते रहते हैं।

आजकल वे बड़े सबेरे उठकर नहा-धोकर साफ-सुथरे कपड़े पहनकर घर से निकल पड़ते हैं। अमूमन खादी का सफेद कुर्ता और सफेद धोती उनका पहनावा होता है। सबसे पहले वे फूल-मालाओं की दुकान पर जाते हैं। ताज़े फूलों की कुछ मालाएँ खरीदते हैं। फिर सीधे शहर के रेलवे स्टेशन पहुँचते हैं। और सुबह आने वाली पैसेंजर गाड़ी का इन्तज़ार करते हैं। उन्हें पता है कि आम जनता पैसेन्जर गाड़ी में ही यात्रा करती है।

वे पैसेन्जर से उतरने वाली भीड़ के आगे-आगे चलने लगते हैं – अपने गले में मालाएँ डाल, हाथ हिला-हिलाकर सबका अभिवादन करते हुए। इस भीड़ में न वे किसी को जानते हैं और न कोई उन्हें पहचानता है। जो इक्का-दुक्का लोग उन्हें जानते हैं वे उनके इस हाल पर दुखी होते हैं। शायद उन्हें

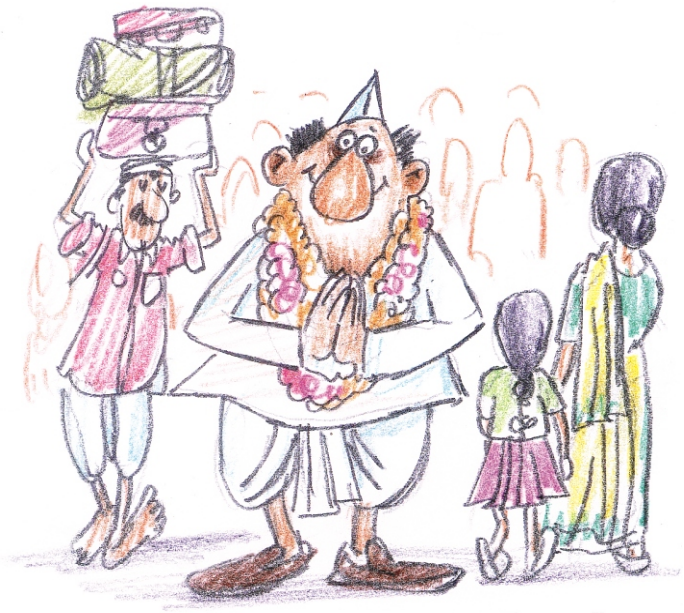

इस हाल में पहुँचाने वालों को गालियाँ भी देते हों। कभी-कभी तो लोग उन्हें उनके घर भी छोड़ आते हैं।

वे किसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाते। बस अपने जीवन को उत्साह और आनन्द के साथ जीते हैं। उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता कि कुछ उन्हें पागल कहते हैं। चकमक

रुमाल से कमाल

ज़मीन से रुमाल उठाना यूँ तो बहुत ही आसान है लेकिन क्या तुम इस तरीके से रुमाल उठा सकते हो?

ऐड़ियों के बल बैठ जाओ। अब नीचे दिए चित्र के अनुसार एक छड़ी को अपने घुटनों के नीचे दबा लो और कोहनियों को मोड़ लो। रुमाल की ओर आगे झुको। सन्तुलन बनाने के लिए अपने हाथों का उपयोग करो और दाँतों से रुमाल उठाने की कोशिश करो।

कर पाए?